IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संगीत तथा चित्रकला में रागमाला का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 करिश्मा तोमर

सहायक आचार्या –चित्रकला विभाग

धनौरी पी.जी.कॉलेज धनौरी

हरिद्वार (उत्तराखंड)

सार–

रागमाला चित्र संगीत के अमूर्त स्वर के मूर्त चित्रण है। संगीत शास्त्रियों ने रागों को उनके गुणों के अनुसार वर्गीकृत किया। जिसमें राग को पुरूष एवं रागिनी को उनकी स्त्री के रूप में व्यक्त किया है। भारत धर्म प्रधान देश है। इसलिए इनकी कल्पना देवी–देवताओं के रूप में भी की गई और इनके ध्यान भी निर्धारित किये गए है। यदि गायक राग–रागिनियों का ध्यान एकाग्र चित्त से उपयुक्त समय व ऋतु पर करता है और उसका चित्र मस्तिष्क में बिठा लेता है, तो वह श्रोतागणों के समक्ष उस राग का सच्चा प्रर्दशन कर सकता है और यही ध्यान चित्रकला की प्रेरणा बने। कहा जाता है कि भगवान शिव एवं पार्वती के संयोग से रागों की उत्पत्ति हुई है। भारतीय संगीत के अनुसार छः राग तथा तीस रागिनियों का स्वरूप हमें परिलक्षित होता है। इन्हीं राग–रागिनियों का समय भी निर्धारित किया गया है। अर्थात् उपयुक्त समय पर गाने से यह राग और भी प्रभावशाली होते है। रागों का ऋतुओं के साथ भी गहरा सम्बन्ध है । जो सौन्दर्य एवं रस की सिद्धि करते हैं। राग यथा भैरव, हिण्डोल, मेघ, श्रीराग, दीपक मालकौंस है और प्रत्येक राग की पाँच–पाँच पत्नियाँ और इन्हीं रागों के आठ पुत्र भी माने गये है। पहाड़ी शैली में इन्हीं राग–रागिनियों को चित्रों के माध्यम से मूर्त किया गया है। जो अपने भीतर सौन्दर्य को व्यक्त करते है। राजस्थानी शैली के विभिन्न कला केन्द्र रहे है। जिनमें रागमाला चित्रों का सुन्दर सृजन हुआ है। जिनमें मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती, ढूढाँड़ राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख शैलियाँ है । मेवाड़ आरम्भिक रागमाला चित्रों का प्रथम दर्शन स्थल है। यहाँ चित्रित हुए रागमाला चित्र सौन्दर्य की आभा बिखेरते हुए रस का संचार करते है। इन चित्रों का सौन्दर्य आलौकिक है। इसी प्रकार मारवाड़ हाड़ौती, ढूढाँड़ आदि शैलियों के रागमाला चित्र अपने सौन्दर्य एवं माधुर्य से कला जगत की अमूल्य धरोहर के रूप में जगमगाते हुए प्रतीत होते है ।

प्रस्तावना– भारतीय चित्रकला शैली में रागमाला के चित्रों में चित्रण का मूल तत्व सौंदर्य, भाव और रस है । चित्रकार के अनुसार माध्यम विपरीत हो जाता है। संगीत स्वर के माध्यम से सौंदर्य, रसाभिव्यक्ति है। संगीत व कविता के शब्दों के माध्यम से यह अभिव्यक्ति करता है तो कलाकार इसी अभिव्यक्ति के लिए चित्रण में रंग रेखाओं को माध्यम बनाता है। संगीत और कविता, श्रव्य तथा चित्र, दृश्य कला से सम्बन्धित है। श्रव्य को दृश्य में परिवर्तित करने का प्रयास रागमाला चित्रों में होता रहा है। जहां शब्द ठहर जाते हैं। रागमाला के चित्रों की भाषा वहीं से प्रारम्भ हो जाती है और रागमाला चित्रण में रंग रेखाएं आशक्त हो जाती है। संगीत और कविता दोनों का समन्वय मिलकर संगीत को रागमाला चित्रण में रस व भावाभिव्यक्ति को सहज ही व्यक्त करता है।

रागमाला चित्रण में संगीतात्मक कलात्मक रूपों की सृजनात्मक क्षमता किसी भी दर्शक को सुंदर एवं संगीतमय सौन्दर्य से अभिभूत करने में पर्याप्त है। हमारे हृदय में भावों का ऐसा भंडार है। जिसमें निरंतर प्रश्नों का संचार होता रहता है अथार्त् रागमाला के चित्रण का भाव, सौन्दर्य एवं रस इन चित्रों में देखने को मिलता है। राग और स्वर एक दूसरे से जुडे हुए हैं एवं रागमाला के चित्रण में संगीतपूर्ण चित्रांकन दृष्टिगोचर होता है। (तिवारी, प्रसाद रघुनंदन (1998), पृ0 सं0–56)

चित्रकला के इतिहास में रागों पर आधारित इस चित्रण श्रृंखला को तैयार किया गया है । जिसे हम रागमालाण कहते हैं। रागमाला में जब कलाकार मूर्त एवं अमूर्त कलाओं को अपने स्वयं के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। तो वह कला के सृजनात्मक संपूर्ण संसार को आनंद प्रदान करता है। इसी आनंदमयी रस का पान हर कला प्रेमी करता है। इसी के माध्यम से कलाकार की कृतियों में रस का संचार होता है और यही रस सौंदर्यानुभूति है। राग और संगीत कलाएं एक दूसरे को प्रभावित कर सौन्दर्य एवं रस की अनुभूति का अहसास कराती है। जिसके श्रेष्ठ एवं सहज उदाहरण हैं, रागमाला चित्रावली जो चित्रकार के हृदय भावों पर आधारित है। सभी कलाओं का एक लक्ष्य होता है व आनन्दानुभूति इसी आनन्दानुभूति से भाव सौन्दर्य एवं रस का परस्पर सम्बन्ध है। 17वीं शताब्दी में बनाया गया चित्र मुगल लघु रागमाला श्रृंखला का है। इसमें रागिनी मल्हार को दर्शाया गया है। ये रचनाएँ मध्यकालीन समय में भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तर भाग में बनती थीं। राजा महाराजा इनका उपयोग किया करते थे। उन दिनों चित्रकार व कलाकारों का नाम उतना महत्व नहीं रखता था। जितना कि राजा या राजवंश का नाम प्रचलित हुआ करता था । इसलिए इनको 'मुगल' या 'राजपूत' दरबार केनाम से प्रसिद्धी मिली। (मुताकर, सुमति (1987), पृ0सं0–119)

रागमाला चित्रकला भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व के कला इतिहास में अद्वितीय परंपरा मानी गई है। राग–रागिनी चित्रों के सिद्धांत तो भारतीय हैं। परंतु अन्य देशों में अपने संगीत को चित्रकला के रूप में चित्रित करने की कल्पना भी नहीं की गई है। गायक और गायन संगीत वाद्य यंत्रों को बजाते हुए चित्रित किये गये हैं। जिन का स्वरूप यथार्थवादी है। सभी देशोंमें कला और विज्ञान को देवी स्वरूप या व्यक्तियों से जोड़ा गया है। रागमाला के चित्रों में वाद्य यंत्रों के साथ चित्रित करना और स्वयं संगीत को चित्रित करना अलग बात है। रागमाला चित्रों में कविताओं की पंक्तियों को भी चिवित किया गया है परंतु उसमें भारतीय संगीत की वाद्य यंत्रों के साथ चित्रित करना और स्वयं संगीत को चित्रित करना अलग बात है। रागमाला चित्रों में कविताओं की पंक्तियों को भी चित्रित किया गया है। परंतु इसमें भारतीय संगीत की भावना और रूप का चित्रण होता रहा है। संगीत में छिपी असीमित शक्ति स्वरों की वैज्ञानिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न होती थी। जैसे दीपक राग आग की गर्मी से संबंधित है और इस राग के दुष्प्रभावों के कारण इसका प्रचलन बंद कर दिया गया। कहा जाता है कि एक मठ पर निरंतर पवित्र ज्योति जला करती थी। एक बार इसकी देख रेख हेतु नियुक्त साधु महाराज की गलती से वह ज्योति बंद हो गई। जिससे संपूर्ण देश पर अज्ञात अनहोनी जैसी आशंका व्याप्त होगई। उस समय एक प्रसिद्ध संगीतकार ने दीपक राग इस प्रभाव के साथ गया की ज्योत्ति पुनः जल उठी। (शर्मा, महेन्द्र कुमार, (1990), पृ0सं0–62)

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पद्धति में 10 थाटो का प्रयोग होता है। जोकि स्वर के अलग–अलग संयाजेन में बनते हैं। इनके अनुसार ही राग निर्मित होते हैं। जिसके चलन व संयाजेन के हिसाब से बनते हैं गीत, तान, आलाप, इत्यादि । राग अपने अन्दर धुन या ध्वनि का संचार करते हैं। जो माना जाता है कि किसी एक भाव एवं रस का संचार करता है। रागों का प्रयोग समय काल दिन और ऋतुओं को ध्यान में रखकर गाये जाते हैं। रागमाला चित्र राग को वास्तविक चित्र प्रदान करते हैं। इनमें राग या रागिनी को ध्यान में रखते हुए रागमाला के चित्रणों में ज्यादातर श्रृंगार, भाव व रस दर्शाया जाता है। मल्हार राग में वर्षा ऋतु और उसके पहलूओं का वर्णन किया जाता है। मल्हार राग का सीधा सम्बन्ध वर्षा ऋतु से होता है और मल्हार राग का गायन रात्रि के समय किया जाता है। इस चित्रण में आसमान को देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि सायं का समय हो और ऊपर बादल वर्षा ऋतु को स्पष्ट करते नजर आते हैं।

इन चित्रों में प्रत्येक राग को एक रंग, मनोदशा तथा एक नायक और नायिका (नायक और नायिका) की कहानी का वर्णन किया गया है। यह मौसम और दिन और रात के समय को भी स्पष्ट करता है। जिसमें एक विशेष राग गाया जाता है और अंत में अधिकांश चित्रों में राग से जुड़े विशिष्ट हिंदू देवताओं का भी चित्रांकन किया जाता है जैसे भैरव या भैरवी से शिव, श्री से देवी आदि। रागों, लेकिन उनकी पत्नियो, रागिनियाँ), उनके कई बेटे (रागपुत्र) और बेटियाँ (रागपुत्री) । रागमाला में मौजूद छह प्रमुख राग भैरव, दीपक, श्री, मालकौंस, मेघ और हिंडोल हैं और उन्हें वर्ष के छह मौसमों–ग्रीष्म, मानसून, शरद ऋतु प्रारम्भिक सर्दियों और वसंत के दौरान गाया जाता है।

संगीत रत्नाकार भारतीय रागों के वर्गीकरण पर 12वीं शताब्दी का एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। जिसमें पहली बार प्रत्येक राग के पीठासीन देवता का उल्लेख है। 14वीं शताब्दी से, उन्हें संस्कृत में लघु छंदों में वर्णित किया गया था। ध्यान, 'चितंन', और बाद में चित्रों की एक श्रृंखला में दर्शाया गया। जिसे रागमाला चित्र कहा जाता है। (बृहस्पति, बर्द्धन सौभाग्य (2004). पृ0सं0–65) रागमाला की कुछ सर्वश्रेष्ठ उपलब्ध कृतियाँ 16वीं और 17वीं शताब्दी से हैं। जब यह रूप शाही संरक्षण के तहत विकसित हुआ था, हालांकि 19वीं शताब्दी तक यह धीरे–धीरे फीका पड़ गया ।

संगीत कला में बसंत राग हिंदुस्तानी पद्धति का शास्त्रीय संगीत का राग है। बसंत राग का अर्थ वसंत ऋतु से है अतः इसे विशेष रूप से बसंत ऋतु के समय गाया बजाया जाता है । इसके आरोह में पाँच तथा अवरोह में सात स्वरों का प्रयोग किया जाता है। अतः यह राग औडव–संपूर्ण जाति का है। (बृहस्पति, बर्द्धन सौभाग्य (2004), पृ०सं0–65) यह वसंत ऋतु में गाया जाने के कारण इस राग में होली का चित्रण अधिक मिलता है। यह प्रसन्नता तथा गाया जाने के कारण इस राग में होली का चित्रण अधिक मिलता है। यह प्रसन्नता तथा उत्फुल्लता का राग है। ऐसा माना जाता है कि इसके गाने व सुनने से मन प्रसन्न हो जाता है । इसका गायन समय रात का अंतिम प्रहर है किंतु यह दिन या रात में किसी समय भी गाया बजाया जा सकता है। रागमाला में इसे राग हिंडोल का पुत्र माना गया है। यह पूर्वी थाट का राग है। शास्त्रों में इससे मिलते जुलते एक राग वसंत हिंडोल का उल्लेख भी मिलता है। यह एक अत्यतं प्राचीन राग है । जिसका उल्लेख अनेक प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।

जिस प्रकार भारतीय संगीत का जन्म रागों से हुआ है। उसी प्रकार भारतीय कला में रागमाला चित्रकला शैली का उद्भव भी रागों से हुआ है। इन्हीं रागों पर आधारित राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में रागमाला के अत्यतं सुन्दर चित्रण हुआ है। इन चित्रणों में सौन्दर्यता, भावुकता, संगीतमय एवं रस की विशेष प्रधानता है। (गुप्त, चन्द्र दिनेश (1970), पृ0सं0–57) राजस्थान एवं पहाड़ी रागमाला चित्रण श्रृंखला प्रणाली में संगीत की वाद्य कला को रागमाला चित्रण में चित्रित किया गया है। रागमाला चित्रण राजस्थान एवं पहाड़ी शैली के कलाकरों की विशेष कृति है। जिसको भारतीय कला इतिहास में ख्याति प्राप्त है। रागमाला की चित्रण श्रृंखला की रागमय, भावमय, संगीतमय, सौन्दर्यमय एवं रसमय रहस्मयी विशेषता को अपने इन शोध के माध्यम से किया गया है।

श्री कृष्ण भक्त सूरदास जी के पदों में न केवल प्रमुख राग–रागिनी ही नहीं, इसमें प्रधान–अप्रधान सभी रागों को अपने गीत एवं पदों में आश्रय बनाया है, जैसा कि इस सुर पद में उल्लेख किया गया है–वर्णित है इस पद में छतीस रागिनीः राग–रागिनी चित्रों के अनुसार ही कल्पित किये गये प्रतीक होते हैं। उनमें से कुछ प्रमुख रागनियों को रागमाला के चित्रों में निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है।

राग भैरव	–	धीरोद्धत नायक
रागिनी भैरवी	–	प्रोषित पति का विरहिणी नायिका
वरारी रागिनी	–	वासकसज्जा नायिका
मधु–माधवी	–	स्वाधीन पतिकाध्‌ विरहिणी नायिका
सैन्धवी रागिनी	–	खण्डिताध्‌ उत्कण्ठिता नायिका
बंगाली रागिनी	–	प्रोषित पति का विरहिणी नायिका
राग मालकोश	–	दक्षिण नायक
टोडी रागिनी	–	प्रगल्भा स्वाधीन पतिका ध्‌ विरहिणी नायिका
गौरी रागिनी	–	विप्रलब्धा नायिका
गुनकली रागिनी	–	विरहोत्कण्ठिता नायिका
खम्भावती रागिनी	–	विरहोत्कण्ठिता (उद्वेग एवं प्रलाप की दशा)
हिंडोलराग	–	धीर ललित नायक
षटमंजरी रागिनी	–	विरहोत्कण्ठिता नायिका
दीपक राग	–	धीरोद्धत नायक
देशी रागिनी	–	क्रिया विदग्धा स्वाधीन पतिका
कामोदी रागिनी	–	विरहोत्कण्ठिता नायिका, वासकसज्जा, प्रतीक्षारत
विहाग रागिनी	–	गर्विता, स्वाधीन पतिका
केदारा रागिनी	–	विरहिणी नायिका, सन्यासिनी
धनाश्री रागिनी	–	प्रेषित–पतिकानायिका
वसन्त रागिनी	–	स्वाधीनपतिका
आसावरी रागिनी	–	विरहिणी नायिका
मेघ राग	–	उत्कण्ठिता नायिका
भूपाली रागिनी	–	विरहोत्कण्ठिता नायिका
देसकार रागिनी	–	स्वाधीन पतिका नायिका
विभास रागिनी	–	रति प्रीता संयोगवती नायिका

इस प्रकार भक्ति और संगीत दोनों के आधार पर ही विभिन्न काव्य रचनायें गीतों, पदों, भजनों आदि के रूप में रची गयी। उन सभी पर नायक–नायिका के चित्रों का प्रभाव पडा । भारतीय चित्रकला का भी एक वृहद अंश रागमाला चित्रकला से प्रभावित हुआ तथा यह राग–रागिनी चित्रण एक महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय शाखा के रूप में विकसित हुये। (जैन, रैनू (2006), पृ०सं०–33)

भारतीय संगीत का प्राकृतिक रूप रागों में मिलता है। रागों की रचना में संगीत के सुरों के साथ भक्ति एवं श्रृंगार की भावना का समन्वय किया गया है। जिनके कारण किसी भी राग में प्रयोग होने वाली विभिन्न श्रुतियों एवं स्वरों का चयन भावानुसार किया गया है। इसी को आधार बनाते हुए राग के बोल अथवा पदों को चुना गया है। इनकी भाषा और भाव दोनों ही राग की श्रुतियों एवं सुरों की प्रभाव वृद्धि में सहायक होते हैं। इनमें उच्च कोटि की कल्पना भावुकता एवं लयात्मक के दर्शन में प्रतीकात्मक होते हैं। (पटेल, सिंह गिरीश (2007). पृ०सं०– 82

संगीत में रागों के स्थित स्वरूप ग्रहण कर लेने पर एक ओर जहां उसमें प्रयुक्त होने वाले स्वर निश्चित होगे, वहीं दूसरी ओर आकारगत स्वरूप भी कल्पित किए गए। रागों का जोभावमय रूप था, उन्हीं की अनुकूल प्रतीक रूप में देवता, देवी, मानुषी एवं नायक–नायिका ध्यान निश्चित हुए। इसी प्रकार कुछ आकृतियां नायक रूप में तथा कुछ आकृतियां नायिका रूप में कल्पित की गई। इन्हें राग और रागिनी के नाम से जाना जाता है। इनमें छः मुख्य भाग राग माने जाते हैं और इनकी तीस अथवा छत्तीस रानियां मानी जाती है। प्राचीन भक्तिकाल में पदों, भजनों एवं गीतों आदि में संगीत की राग–रागनियों का गायन किया जाता था । तदुपरांत आगे चलकर मुगल दरवारों के बिलासिता के वातावरण में ठुमरी का विकास हुआ और हवेली संगीत तथा कव्वाली आदि का भी प्रचलन हुआ । (कुलकर्णी, वसुधा, (1990), पृ0सं0–78)

भक्ति में राग–प्रधान सगुणोपासना के प्रभाव से राग–रागिनीयों के दैवीय स्वरूप की भी कल्पना की गई है। जिस वातावरण से राग–रागिनी के प्रतीक भावना का उदय होता है। उसकी कल्पना मात्र से प्रत्येक को मूर्त रूप देने की चेष्टा में पद्य–सृष्टि की गई। राग और रागिनी की कल्पना नायक एवं नायिकाओं के रूप में की जाती है। भक्ति आन्दोलन के प्रभाव के कारण इनका अधिकांश स्थान राधा–कृष्ण के चित्रों ने ले लिया है। इसके पूर्व भगवान शिव–पार्वती के भी नायक–नायिकाओं के रूप में स्थान दिया गया था। राग में श्रृंगार रस की प्रधानता है और उसका स्वरूप भी लगभग वही है। जो ऋतु गीतों एवं नायक–नायिका व रागमाला में मिलता है।

रागमाला का विषय 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में बहुत लोकप्रिय हुआ और धीरे–धीरे नूतन राग–रागनियों के आविष्कार के कारण इनकी संख्या 108 तक पहुंच गई। रागमाला और नायक–नायिका एवं बारहमासा के चित्रण में इतनी समानताएं है कि यदि विशेष संकेत ना किया जाए तो उनकी पहचान में भ्रम हो जाता है। संगीत का अभिधान रस है और रसों में मुख्य श्रृंगार है अतः संगीत रचनाओं में ऐसे स्वरों की आवयश्कता है। जिनमें श्रृंगार के वर्णन की अत्यतं प्रमुखता है। (कीर्ति, लावाण्य (2009). पृ०सं०–39) जहां संत गायकों द्वारा राधा–कृष्ण संबंधी श्रृंगार पदों का प्रादुर्भाव हुआ वही मुसलमान बादशाहों के दरबार में लगभग वैसे ही पदों की रचना 'ठुमरी' नाम से की गई। नायक–नायिका के सिद्धातों पर उक्त ठुमरियों के बोल खरे उतरते हैं। ऐसी कोई नायिका नहीं जो किसी भी ठुमरी की परिधि में ना आए। नायक–नायिका से सम्बन्धित वर्णन करते हुए रागाचार्यों ने रागों का विस्तार से वर्णन भी किया है। ''मध्यादि'' रागिनी का ध्यान निरूपित करते हुए संगीत दर्पणकार ने लिखा है कि सहासपतिका आलिंगन करने वाली स्वेच्छा प्रिय का चुंबन करने वाली कमलाक्षी, कुंकुम लिप्त स्वर्ण सदृश छवि के शरीर वाली रागिनी को मुनि जनोंने ''मध्यादि'' कहा है। इस रागिनी में स्वाधीन पति का मध्या नायक के लक्षण मूर्तिमान हैं। आश्वलेष, चुम्बन तथा कुसुम आदि दान करने वाली प्रणय कोमल प्रीतम की अनुराग स्तुति करने वाली नायिका स्वाधीन पति का है।

राजस्थान शैली में असावरी रागिनी का अत्यंत सुन्दर चित्रण 19वीं शताब्दी में हुआ है। उसमें नायिका एक सदर चौकी पर मसंद के सहारे विराजमान है। चौकी पर आलेखन बना राजस्थान शैली में असावरी रागिनी का अत्यंत सुन्दर चित्रण 19वीं शताब्दी में हुआ है। इसमें नायिका एक सुन्दर चौकी पर मसंद के सहारे विराजमान है। चौकी पर आलेखन बना हुआ है। जो अत्यतं शोभायमान लग रहा है।

इस चित्र में एक सुन्दर नायक पीले वस्त्रों से सज्जित हाथ में लिए वीन की मधुर बुन बजा रहा है। जिसकी माधुर्य धुन से मुग्ध होकर सर्प रागिनी के शरीर पर आस–पास आकर वीन की धुन से आकर्षित हो रहे हैं। इस चित्र में एक सरोवर में कमल के कोमल पुष्पों व स्वेत हंसो को दिखाया गया है। यह दृ श्य सौन्दर्यता से ओत–प्रोत है। (चित्र सं0–1)

चित्र सं0–1: असावरी रागिनी, राजस्थान शैली, 19वीं शताब्दी में चित्रित, रजा पुस्तकालय रामपुर।

प्रस्तुत इस चित्रण में मधुमाधवी का भावुक चित्रण में नायिका भी भावनाओं का अंकन अत्यंत ही स्वाभाविक एवं सजीव रूप में किया गया है। चित्रण में हर्षोल्लास को अभिव्यक्त करती भावपूर्ण नेत्र सुंदर, भावों से प्रफुल्लित मुख मंडल वाली नायिका, लाल व हरे रंगों से सुसज्जित अपने भवन के ऊपर खड़ी होकर मयूर को दाना डाल रही है। इनके पास में ही दो सेविका नायिका की सेवा में तत्पर प्रतीत हो रही है। इस संपूर्ण कृति में सुंदर रंगों का संयोग प्रयोग किया गया है। चित्रण में नायिका आलंबन रूप में दर्शायी गयी है और प्रगति की सुषमा, मयूर, आकाश का नीला वर्ण आदि अत्यंत शोभयमान लग रहा है। (तिवारी, प्रसाद रघुनन्दन (1998), पृ0सं0–20) इस रागिनी के संपूर्ण चित्र भावमय में प्रतीत हो रहा है। (चित्र संख्या–2)

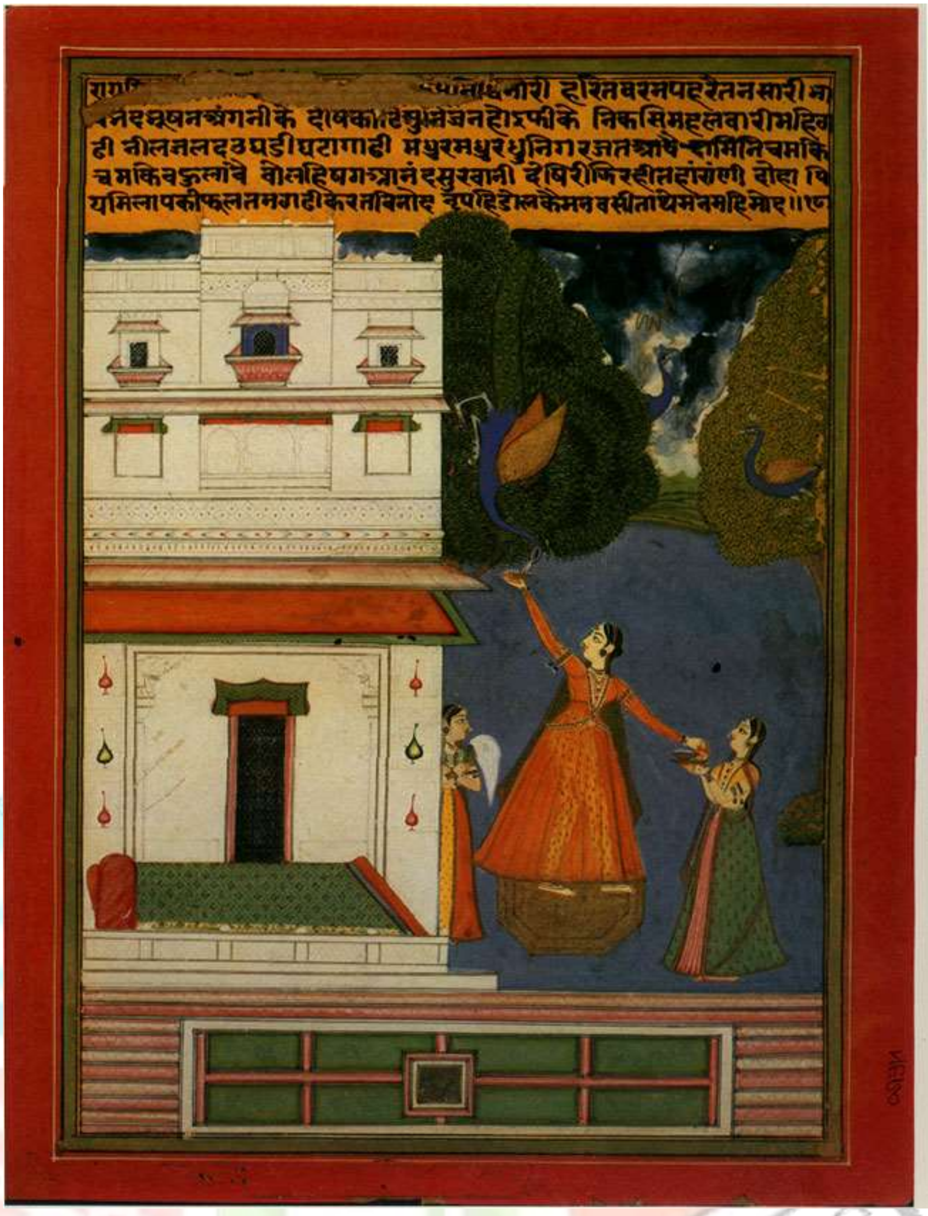

चित्र संख्या–2 : मधुमाधवी रागिनी, जयपुर शैली, 18वीं शताब्दी में चित्रित, ललित कला संग्रहालय बोस्टन।

बंगाली रागिनी में अलंकृत युक्त सुंदर भवन के झरोखे से झांकती हुई सौंदर्य से परिपूर्ण नायिका खड़ी दिखाई दे रही है। इस चित्रण में झरोखे के नीचे बैठा नायक उसे प्रेमपूर्वक निहार रहा है। नायक के मस्तक पर चंदन का टीका शोभित है। जिससे भक्ति का भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। नायक के मुखारविंद के भावों से ऐसा प्रतीत हो रहा है । जैसे नायिका से कुछ संवाद करना चाह रहा हो। इस संपूर्ण कृति में चटक रंगों का संयाजेन अत्यतं चित्ताकर्षक है। चित्रण की पृष्ठभूमि में बाघ चटक रंगों से उकेरा गया है। इस संपूर्ण चित्रण को भक्तिभाव से रंजित आकर्षक प्रतीत होरहा है। (चित्र सं0–3)

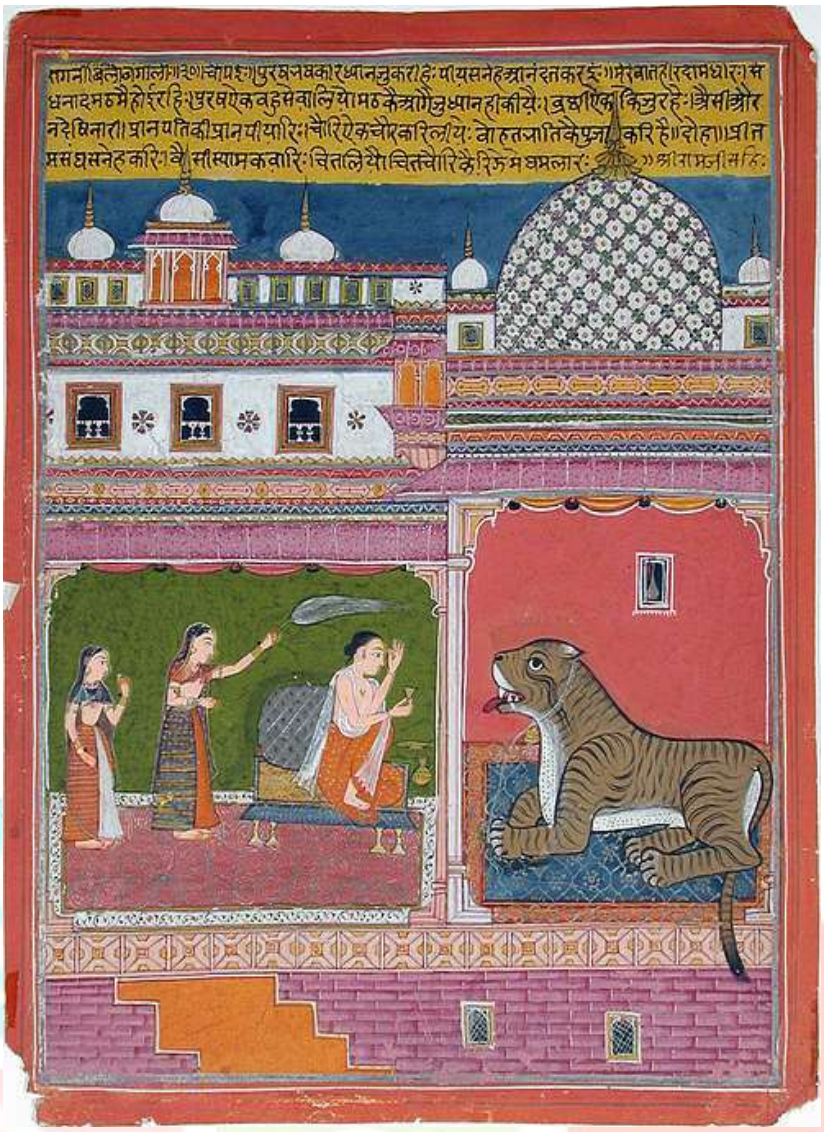

चित्र सं0–3 : बंगाल रागिनी, सिरोही मेघमल्हार, सन् 1700 ई. में लगभग, सैन डिएगो कला संग्रहालय

मेघ राग का वर्णन रागमाला चित्र में सौंदर्य पूर्ण रूप से किया गया है। इस राग का गायन जुलाई–अगस्त वर्षा ऋतु में समय दोपहर 12.00 बजे से 4.00 बजे तक किया जाता चित्रण के उद्यान में सुशोभित श्यामवर्णी नायक और सौन्दर्यपूर्ण नायिका सुशोभित दिखाई दे रही । इस सुंदर नवीन मेघों के मध्य बिजली चमक रही है। अपने प्रियतम के पग–पग साथ चलती नायिका बेहद आनंदित एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण प्रतीत हो रही है। इस चित्र में नायक–नायिका विभिन्न रंगों की कलात्मक वशेभूषा एवं आभूषणों से अंकित चित्रण किया गया है । इन्हीं के पास सेविका खडी हैं। संगीत वाद्य यंत्र बजा रही हैं। वृक्ष की सुंदर टेनियो पर बैठे मयूरा को देखने से ऐसा लगता है जैसे कि यह संगीत की ध्वनि के स्वरों में अपनी संगत दे रहे हैं। इस समय वर्षा का सौंदर्य अलौकिक है। (जैन, रैनू (2006), पृ0सं0–45) (चित्र सं0–4)

चित्र सं0–4 : मेघ राग, सिरोही राजस्थानी शैल 1628 ई. में शाहबुद्दीन द्वारा चित्रित, ललित कला संग्रहालय बोस्टन ।

विभास रागिनी के चित्रण में मनोरस से सज्जित एक सुंदर एवं भव्य महल को दिखाया गया है। जिसके भीतर नायक–नायिका प्रेम वर्ण के मिश्रित भावों से ओत–प्रोत लाल एवं स्वर्ण रंग से विभूषित सिंहासन पर विराजित दर्शाया गया है। नायक ने अपने हाथ में अत्यतं सुंदर धनुष धारण किया है। इस चित्र में महल की दीवार लाल, हरा, एवं श्वेतर्ण प्रणयी नायक–नायिका के उत्कण्ट भावों को प्रतिबिंबित कर रहा है। चित्रण में नायक–नायिका के प्रेम की पराकष्ठा स्पष्ट दिखाई देरही है। कृति में नायक–नायिका आलंबन रूप में दर्शाए गए हैं। प्रस्तुत चित्र में प्रातः काल का अंकन किया गया है। जिससे विभास रागिनी में महल का सुंदर अलंकरण देख दर्शक मंत्रमुग्ध होजाता है। इस चित्र में कलाकार ने रागिनी की प्रमुख विशेषताओं को आत्मसात कर संपूर्ण भावों को व्यक्त किया है। (चित्र सं0 –5)

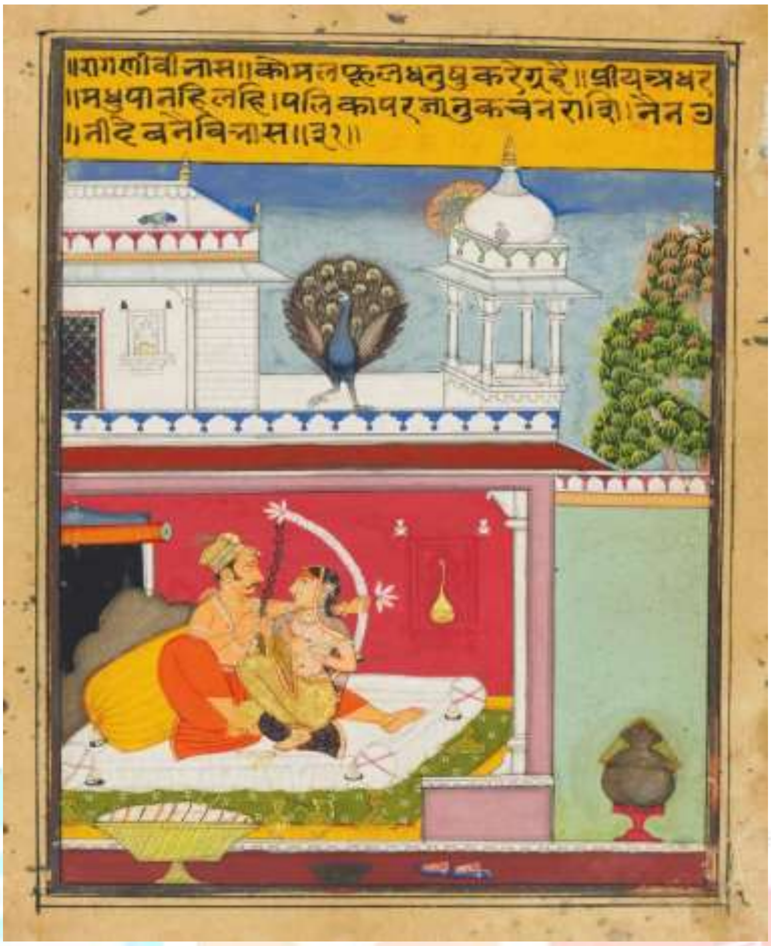

चित्र सं0 –5 : विभास रागिनी, उनियारा राजस्थानी शैली, ललित कला संग्रहालय बोस्टन

मालवा शैली में लघु चित्रण शैली में लोककला के तत्वों पर आधारित चित्रण के प्रस्तुत अध्ययन से विदित होता है कि लोककला के आधार पर मालवा शैली में बने इस लघु चित्रों मे मानवाकृतियों के अंग–प्रत्यगों की भाव–भंगिमा और मुद्राओं का अलौकिक अंकन, प्रकृति का सतरंग वैभव और विषय का अनूठा काव्यात्मक व सौन्दर्यमयी अंकन हुआ है। (गांगली, ओ. सी. (2004), पृ०सं०–136) सौन्दर्य की अभिव्यंजना जैसे मानव सौन्दर्य चित्रण और उनका हाव, भाव, प्रकृति, सौन्दर्य वर्णन, अलंकार प्रियता, रस निरूपण, श्रृंगार वर्णन, संयोग–वियोग, नख – शिख वर्णन तथा विरह मिलन की कोमल वृत्तियों के चित्रण भारतीय लघु चित्रों में विशेष महत्व रखते हैं।

इस प्रकार मालवा कला में लघु चित्रण की बहुमुखी वृद्धि हुई और लघु चित्र में लोककला को वैभवशाली रूप व स्नेह प्रदान कर मालवा कलम ही नहीं, बल्कि भारतीय चित्रकला में भी अपना अलग एवं महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करनेका सफल कार्य किया है।

काँगड़ा शैली में इस रागमाला चित्रण में सूर्य के समान तेजस्वी दिखने वाला प्रतिभामान सम्पन्न वीर पुरूष नायक एक सुंदर ऐरावत पर विराजमान है। नायक के मुख पर अभिमान से भरा वीरता का भाव स्पष्ट दिखाई देरहा है। नायक एक हाथ में जलता हुआ दीपक लिए हुए है। जो अधिक शोभायमान लग रहा है। इस चित्रण में नायक के पीछे एक सेवक चवँर हिला रहा है। इसे देखने से लगता है कि वह महाराज की सेवा में लीन है । (चित्र0सं0–6)

चित्र सं0–6 : दीपक राग, काँगड़ा शैली, चित्रकार कैलाश राज द्वारा चित्रित ।

हिंडौल राग का चित्रण बहुत ही मनोरम एवं सौन्दर्य पूर्ण ढंग से किया गया है। इस राग को मार्च एवं अप्रैल माह के महीने में जिसे हम वसन्त ऋतु भी कहते हैं। इस राग का गायन प्रातः काल से 8:00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक किया जाता है। इस चित्रण में एक सुंदर नायक एक पालने में बहुरंगे वस्त्रों से सुशोभित होकर उसके मस्तक पर अलंकरणों एवं मोतियों से सुसज्जित मुकुट की शोभा देखते ही बनती है। उसके पास एक नायिका जो उसकी सेवा में तत्पर दिख रही है। चित्रण को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे साक्षात कामदेव पालने में विराजमान हो गए हो। नायक के मुख्य मंडल पर चंन्द्रमा की जैसी क्रांति अति शोभनीय रूप लेकर दमक रही है। जिन्हें नायिकाएं उन्माद भरी अभिलाषाओं से देख रही हैं। इस चित्र की संपूर्ण कृति के दर्शन से दर्शक का हृदय आनंद विभोर होकर झूमने लगता है । (चित्र सं0–7)

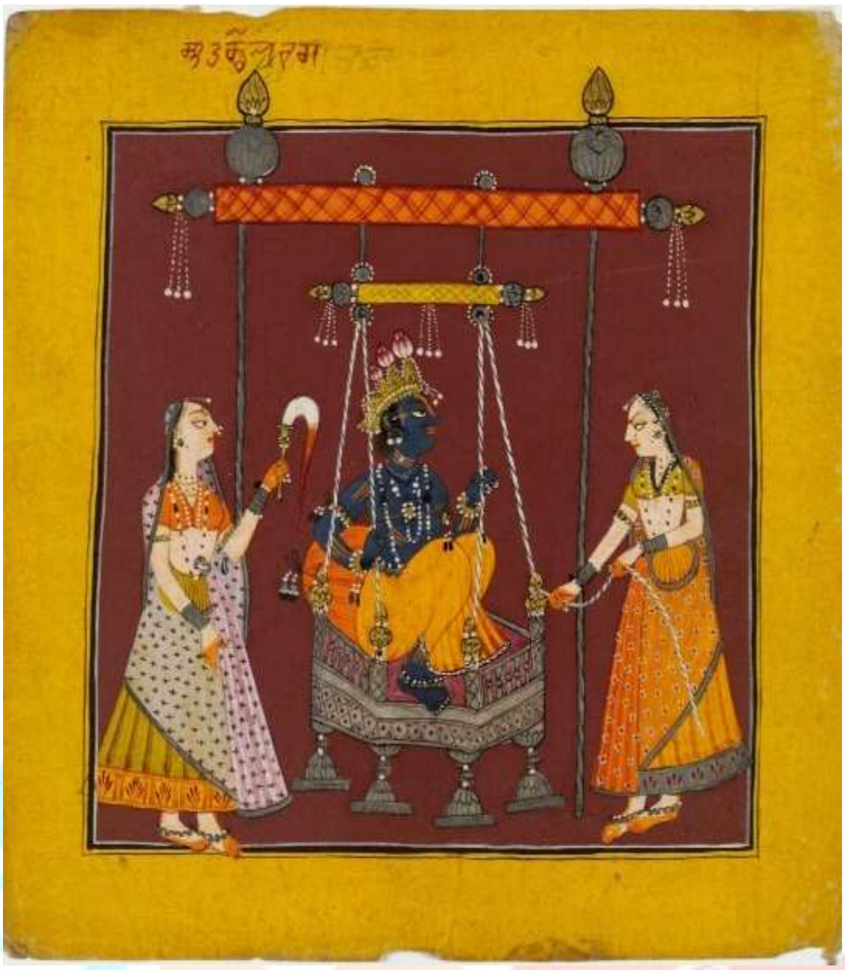

चित्र सं0–7 : हिंडौल राग, काँगड़ा पहाड़ी शैली में चित्रित, विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय

राग बसंत को दर्शाती हुई अधिकांश तस्वीरें भगवान श्री कृष्ण कोवसंत ऋतु के हर्ष में महदोश हुए ढोल–मजीरे के संगीत पर नृत्य करते दर्शाती है। चित्र में ये ढोल–मजीरे एक कुसुमित पेड़ों से घिरे घास के मैदान में दो बालाओं द्वारा बजाये जाते हैं और कभी–कभी इन चित्रों में एक कमल का तालाब भी दर्शाया जाता है। फागुन महीने को दर्शाते चित्रों में श्री कृश्ण के अलावा पुरूषों और महिलाओं के समूह को होली मनातेभी देखा गया है । प्रस्तुत भी राग वसंत का ही एक चित्रण है। जिसमें होली के रंग और पुरूषों के करीब बैठी दो चित्र महिलाओं को संगीत बजाते देखा जा सकता है। (रंधावा, एम. एस. (1971), पृ0सं0–96) (चित्र0सं0–8)

चित्र सं0–8 : बसंत राग, पहाड़ी शैली, लगभग 18वीं शताब्दी में चित्रित, रजा पुस्तकालय रामपुर ।

निष्कर्ष–

रागमाला के चित्रों में कलाकारों ने संगीत जैसे अमूर्त तत्व को चित्रकला जैसी कला द्वारा प्रस्तुत कर एक अनोखा प्रयोग किया रागमाला के चित्रों का प्रारम्भिक स्वरूप लगभग 15वीं शताब्दी से दिखायी देने लगता है। राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला में राग–रागिनी की चित्रात्मक विभिन्न कृतियों का संगीतमय रागों की विभिन्न पहलुओं के चित्रण की विवेचना करते हुए, प्रत्येक राग–रागिनी की चित्रात्मक व्याख्या की गयी है। इन चित्रों में भारतीय संगीत प्रणाली को चित्रों में उकेरा गया है। इन राग–रागिनी के स्वरूपों को दर्शन मात्र से संगीतमय आनन्द की अनुभूति प्रतीत होती है। रागमाला चित्रण श्रृंखला की सौंदर्य के विशेष संगीतमय आनन्द की अनुभूति प्रतीत होती है। रागमाला चित्रण श्रृंखला की सौंदर्य के विशेष भावात्मक स्वरूपों का वर्णन राग–रागिनी के चित्रों में नायक–नायिका के आधार पर किया गया है । इस राग–रागिनी चित्रण में भावात्मक सौन्दर्य की रसाभिव्यक्ति का वर्णन किया गया है । राग–रागिनी चित्रण में चित्रकार ने अपने हृदय के भावों को रागमाला के चित्रों में अंकन किया है। इसे देख समाजिक दर्शक को रसात्मक अभिव्यक्ति का अहसास होता है। चित्रकला की दृष्टि से रागमाला के सौंदर्यमयी चित्र समाज पर गहरी छाप छोडते हैं। जिस समाज को चित्रकला के विषय में नई दिशा मिल सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

- द्विवेदी, पारसनाथ (2017), ''नाट्यशास्त्र का इतिहास, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, प्रथम संस्करण – पृ0सं0–147
- शर्मा, वन्दा (2012). ''राग मालकौस का वृहन एवं प्रभाव'', नवजीवन पब्लिकेशन निवाई, प्रथम संस्करण – पृ०सं०–162
- द्विवेदी, प्रेमशंकर (2007). ''भारतीय चित्रकला के विविध आयाम', कला प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण– पृ०सं०–123
- द्विवेदी, आचार्य रेवाप्रसाद, (1986). ''नाट्यशास्त्रम'', भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान शिमला एवं आर्चन बुक्स इंटरनेशनल, प्रथम संस्करण– पृ०सं०–141
- तिवारी, रीता (2010). ''आधुनिक नाट्य साहित्य, आधुनिक संस्कृत नाट्य साहित्य और सौंदर्यकला शास्त्रीय, प्रथम संस्करण– पृ0सं0–56
- तिवारी, रामानन्द (1962). ''अभिनव रस मीमांसा'', भारतीय पुस्तक मंदिर, प्रथम संस्करण– पृ०सं०–47
- प्रसाद, रघुनन्दन (1998). ''मध्यकालीन काव्य चित्र एवं संगीत मे रागतत्व'', विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण – पृ0सं0–154
- वर्मा, नाथूलाल (2009). ''राजस्थानी चित्र शैली की विभिन्न चित्रण विधियाँ'', राज पब्लिशिं हाउस जयपुर, प्रथम संस्करण–पृ०सं०–111
- नीरज, जयसिंह (1999), ''कला का सृजनात्मक संसार, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण – पृ0सं0–57
- नगेन्द्र, (1964). ''रस सिद्वान्त'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– पृ०सं०–169
- अग्रवाल, किशोर गिर्राज, (1998), ''कला समीक्षा'', देव ऋषि प्रकाशन इलालाबाद, प्रथम संस्कार– पृ०सं०–42
- अग्रवाल, आर0 ए0 (2017). ''भारतीय चित्रकला का विवेचन'', कला विलास, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, पृ०सं०–123
- गैरोला, वाचस्पति (1963). ''भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त परिचय'', मित्र प्रकाशन, प्रथम संस्करण – पृ0सं0–35